CH-3 (HOME WORK)

कर्ण का मित्र - प्रेम

शब्दार्थ :-

गुनना - सोचना, विचार करना

सनेह - स्नेह, प्रेम

ऋणी - कर्ज़दार

सोम - चंद्र

सुरपुर - स्वर्ग

तरु - वृक्ष, पेड़

कुठार - कुल्हाड़ी

अनमोल - अमूल्य

रतन - रत्न

बिसात - हस्ती, शक्ति, सामर्थ्य

न्योछावर - अर्पित, कुर्बान

नर - पुरुष

छांह - छाँव

वार - प्रहार

कुरुपति - कुरुवंश के स्वामी अर्थात दुर्योधन